❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि।

ऋग्वेद 8/92/32

हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 39, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 सितम्बर, 2016 से रविवार 25 सितम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य – महर्षि दयानन्द सरस्वती

इसी सन्देश को मूर्तरूप देने हेतु विदेशों में भी आर्यसमाज कर रहा है सराहनीय सेवा कार्य

फरवरी-2016 में आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के 90वें स्थापना दिवस पर घोषित

डरबन में प्रोजेक्ट तृप्ति का सफल लोकार्पण

तृप्ति योजना में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने 20 हजार रैंड (लगभग एक लाख रुपये) तथा श्री वाचोनिधि आर्य जी ने दिया 10 हजार रैंड (लगभग पचास हजार रुपये) का आर्थिक सहयोग।

द.अफ्रीका के ग्रामीण क्षेत्रों में लगवाए पानी के बोरिंग

कभी खेती मजदूरों के रूप में द. अफ्रीका गये भारतीय महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से आर्य समाज का रास्ता चुना और अपनी आजीविका के साधनों को जुटाने के साथ-साथ धर्म प्रचार के कार्य में भी संलग्न हो गये। समय परिवर्तन के साथ-साथ इन भारतीय मजदूरों ने अपने को इतना सक्षम बना लिया कि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज मन्दिरों की स्थापना के साथ-साथ वहां के हिन्दुओं को और वहां की सरकार को भी आर्य समाज की एकता शक्ति से परिचित करा दिया। 12 से 14 फरवरी 2016 को आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का 110वां तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वां स्थापना दिवस डरबन में बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देश-विदेश की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग

– शेष पृष्ठ 5 पर

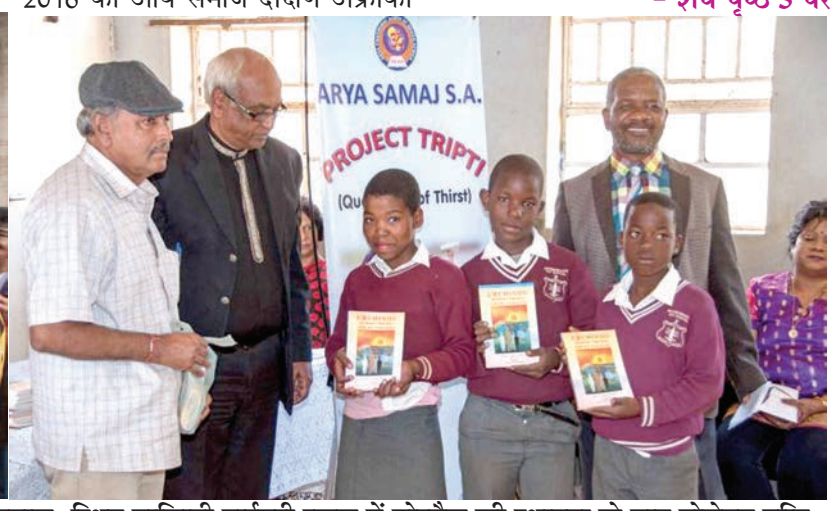

दक्षिण अफ्रीका के हलुहलुवे जिले के अन्तर्गत नार्थ कॉस्टा ऑफ क्वाजुलू नटाल स्थित माजिन्दी प्राईमरी स्कूल में बोरवैल की स्थापना के बाद प्रोजेक्ट तृप्ति का शुभारम्भ एवं श्री लाल सिंह जी द्वारा प्रदत्त पुरस्कार प्रदान करते सभा प्रधान श्री बिसराम रामबिलास जी एवं विद्यालय प्रधानाचार्य श्री गुजू।

पूर्वोत्तर के जनजातीय क्षेत्रों में आर्यसमाज की गतिविधियों को देखने के लिए एक बार अवश्य पहुंचें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्णयानुसार आसाम-नागालैंड में

19-20-21 नवम्बर को होगा विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी रेल/हवाई यात्रा की टिकटें स्वयं आरक्षित करवा लेवें। सम्मेलन में पहुंचने, व्यवस्थाओं/सुविधाओं के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर 9810040982 से सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-22 अक्टूबर 2016 टुंडिखेल, काठमांडु

नेपाल आर्यसमाज का प्रतिनिधि मंडल अन्तिम तैयारियों के लिए नेपाल वापस लौटा

महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले आर्यजनों के लिए अन्तिम अवसर

समस्त आर्य महानुभावों से, जो किसी भी साधन से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने जा रहे हैं या जाने की इच्छा रखते हों उनसे निवेदन है कि यदि वे अपना पंजीकरण न करा सकें हो वे अपना पंजीकरण किसी भी यात्रा ऑप्शन में यथाशीघ्र करवा लेवें। आवेदन पत्र सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है। इच्छुक महानुभाव पूर्ण भरे आवेदन पत्र के साथ आवश्यक राशि का ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भेजें। अधिक जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी (9540040324) से सम्पर्क करें।

नेपाल यात्रा हेतु नया ऑप्शन 2 (सी) तैयार किया गया है। विवरण के लिए पृष्ठ 7 पर देखें।

वेद-स्वाध्याय

पापी और झूठे प्रभु के बन्धन में पड़ते है

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तं उभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयातै।। –ऋ. 7।104।13
ऋषि: **वसिष्ठः।।** देवता– **सोमः।।** छन्द: **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- सोमः=सोमरूप परमेश्वर **वै**= नि:सन्देह **न उ**=न तो **वृजिनम्**= वर्जनीय पाप को **हिनोति**= बढ़ाता है, समर्थन करता है और **न**= न ही **मिथुया धारयन्तम्**= दुहरी बात को-झूठ को-धारण करनेवाले **क्षत्रियम्**= बलवान् को ही बढ़ाता है, किन्तु वह तो **रक्षः**= पापराक्षस का **हन्ति**=हनन करता है और **असद् वदन्तम्**=असत्य बोलनेवाले का **हन्ति**= हनन करता है; ये **उभौ**= दोनों ही **इन्द्रस्य**= इन्द्र रूप परमेश्वर के **प्रसितौ**=बन्धन में **शयाते**=पड़ते हैं।

विनय-जगदीश्वर सोमरूप से सब जगत् का पालन-पोषण कर रहे हैं। सोम-प्रभु के जीवनदायी रस को पाकर ही सब संसार बढ़ रहा है, पुष्ट हो रहा है, परन्तु ये भगवान् पाप को कभी नहीं बढ़ाते; इनका यह सोमरस पाप को कभी नहीं पहुँचता और सब पापों का स्त्रोत-मूल, जो असत्यता है, उसे तो परमेश्वर का जीवनरस मिलता ही नहीं है।

जब मनुष्य सदा इस प्रकार वर्त्तमान 'सत्' के विरुद्ध अपने अन्दर कुछ असत् की रचना करता है, असत्-पर- असत्-दुहरी बातों को अपने अन्दर धारण करता है, तो यह 'मिथुया धारयन्' मनुष्य अपने इस दूसरे असत् द्वारा अपने-आपको आच्छादित कर लेता है और एवं, सत्य की सोम-धारा से अपने को वञ्चित कर लेता है। प्रत्येक पाप का करना भी क्रिया द्वारा सत् से इन्कार करना है, अत: ज्यूं ही मनुष्य असत् को अपने में रचना करता है या ज्यूं ही वह क्रिया से सत्य विरुद्ध कर्म (पाप-वृजिन) करता है, त्यों ही उसका सत्स्वरूप जीवनरसदायी सोम से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह ईश्वरीय जगत् से पृथक् हो जाता है, मानो वह परमेश्वर के बन्धनागार में पड़ जाता है, अपने असत् द्वारा ही वह ढक जाता है, वह बँध जाता है। जहाँ परमेश्वर सोमरूप से सब ठीक चलनेवालों को जीवन देकर बढ़ा रहे हैं, वहाँ इन्द्र के ('इदं दारयिता') रूप से ये ही परमेश्वर विपरीतगामी को पृथक् करके बाँधनेवाले भी हैं। इस प्रकार असत्य बोलनेवाला या पाप करनेवाला जीवन-रस से वञ्चित होकर, सूखकर नष्ट हो जाता है। इसीलिए वर्जनीय होने से पाप का नाम 'वृजिन' है तथा पाप ही 'रक्षः' कहलाता है, चूँकि इससे अपने-आपको सदा रक्षित रखना चाहिए। इस वृजिन को, 'रक्षः' को, वह परमेश्वर नष्ट ही कर देता है, कभी बढ़ाता नहीं है।

मनुष्य यदि इस सत्य को समझे, इसमें उसे तनिक भी सन्देह न हो, तो वह पाप करते हुए घबराये और असत्य बोलते हुए उसका कलेजा काँपे। संसार में यद्यपि हमें दीखता है कि परमेश्वर भी पाप को ही मदद दे रहा है और झूठे को बढ़ा रहा है, परन्तु यह हम क्षुद्र बुद्धिवाले अल्पज्ञों का भ्रम है। हम अल्पज्ञ नहीं देख सकते कि किस पाप का फल कब और कैसे मिलता है?

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या दलित, पानी से भी अपवित्र है?

12

मध्य प्रदेश में गणेश मूर्तियों के विसर्जन के दौरान नदी-तालाबों में 21 लोग डूब गए। इन हादसों में नौ लोगों की मौत हो गई जबकि दो लोग अब भी लापता हैं। पंजाब के सतलुज नदी में गणेश जी की मूर्ति विसर्जित करने गए चार लोगों पर अचानक मूर्ति पलट गई जिस कारण चारों व्यक्ति डूब गए। गोताखोरों ने मौके पर पहुंचकर चारों को नदी से ढूंढ़कर बाहर निकाला। हर वर्ष न जाने कितने लोग परम्पराओं की भेंट चढ़ जाते हैं, लोग मरते रहते है पर परम्परा जीवित रहती है, हम किसी एक सम्प्रदाय की बात नहीं कर रहे इसमें चाहे केदारनाथ यात्रा हो या हज यात्रा। जहाँ कई बार सबसे ज्यादा लोग मरे यदि कभी कुछ नहीं मरता तो वह है 'परम्परा' जो हर वर्ष कई सौ लोगों की जान ले लेती है, उस दिन जो लोग दिल्ली यमुना नदी के पुल से गुजर रहे होंगे। उन्होंने जरूर देखा होगा कि गणेश प्रतिमा का विसर्जन बड़े धूम-धाम से हो रहा था। यदि लोगों ने विसर्जन देखा होगा तो इसके बाद यमुना का गन्दा बदबूदार पानी भी देखा होगा जिसमें लोग अपने आराध्य देव को विसर्जित कर रहे थे। तो एक पल को जरूर सोचा होगा कि जिनके भगवान दलितों के मंदिर में प्रवेश करने से अपवित्र हो जाते हैं क्या वे दलित सच में इस गंदे पानी से भी अपवित्र हैं जिसमें कल लोग गणेश आदि को विसर्जित कर रहे थे? हम नदियों की पवित्रता पर नहीं बस उसमें गिरते गंदे नालों उसके गंदे मैले पानी और आस्था के नाम पर लोगों द्वारा डाले जा रहे कचरे पर सवाल उठा रहे हैं ताकि नदियों की स्वच्छता के साथ-साथ हमारी आस्था की गरिमा भी बची रहे।

हमारी दृष्टि में धर्म कोई परम्परा न होकर एक गुण है, कोई संगठन नहीं बल्कि एक गुणवत्ता है, उपासना है, निराकार परमात्मा की और विसर्जन है बुराइयों का न कि खतरनाक केमिकल से बनाई गई मूर्तियों का। नदियों में मूर्तियों और मालाओं के विसर्जन की जो परम्परा है जो रिवाज है व मृत परम्परा है। दरअसल धर्म मनुष्य के विचारों की क्रांति है, जहाँ धर्म में धार्मिकता थी, सत्य के साथ खड़े होने का साहस था, क्षमता थी। आज उसे अन्धविश्वासों और छुआछूत के जरिये मिटाया जा रहा है। कुछ वर्षों पहले तक यह माना जाता था कि सार्वजनिक गणेशोत्सव महाराष्ट्र का त्यौहार है, पर आज स्थिति यह है कि गणेश विसर्जन के वक्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश में, दिल्ली-मेरठ राजमार्ग पर मीलों लंबा जाम लग जाता है। यही स्थिति दुर्गोत्सव की है। 11वीं सदी से इसके प्रचलित होने के संदर्भ मिलते हैं। अभी पश्चिम बंगाल व बिहार, झारखंड, असम, त्रिपुरा, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में बड़ी संख्या में मूर्तियां स्थापित होती हैं। दुर्गा पूजा लगभग पूरे देश में मनाई जाती है। दुर्गा ही क्या इसी तरह काली पूजा है पश्चिम बंगाल में प्रचलित। इस पूजा ने 19वीं सदी में लोकप्रियता हासिल की। इस पूजा में स्थापित देवी प्रतिमा का रात्रि में ही विसर्जन कर दिया जाता है। बंगाल की यह सबसे बड़ी पूजा बनती जा रही है। इसके बाद आती है सरस्वती पूजा जो मूलत: बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल में बसंत पंचमी के दिन पूजा का विस्तार तेजी से हो रहा है। अब दिल्ली में भी बड़ी संख्या में देवी सरस्वती की मूर्तियां स्थापित की जाती हैं।

हालाँकि भारत जैसे संस्कारित देश में लगभग सभी प्रमुख धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते हैं। अपने अपने धर्म के अनुसार उनके तीज-त्योहार, उत्सव, पर्व और आस्थाएं हैं। धार्मिक विविधता के कारण देश में लगभग साल भर धार्मिक अनुष्ठान एवं कार्यक्रम चलते रहते हैं। धार्मिक कार्यक्रमों में गणेश उत्सव और दुर्गापूजा तथा ताजिया जैसे सार्वजनिक कार्यक्रम होते हैं जिनका आयोजन व्यापक होता है । लाखों लोग पूरी श्रद्धा-भक्ति से उनमें भागीदारी करते हैं। अनुमान है कि अकेले मुम्बई में 1.5 लाख से अधिक गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन होता है। लाखों की संख्या में खतरनाक पेंट वाली मूर्तियों और सामग्रियों को नदी और तालाबों में प्रवाहित किए जाने से पर्यावरण को गंभीर खतरा पैदा हो गया है। इसलिए अब हमें ऐसे तरीके तलाशने ही होंगे या परंपराओं के रूप बदलने होंगे जिनसे प्रकृति और पर्यावरण बचा रहे।

आज तेजी से सारा विश्व बदल रहा है, हम एक नये दौर में प्रवेश कर गये। अब यहाँ से आगे का रास्ता हमे खुद तय करना है कि हम अपनी आने वाली नस्लों के हाथ में क्या देना चाहते हैं -अन्धविश्वास या वैदिक विज्ञान? आज एक तरफ भारत देश के कुछ पढ़े लिखे लोग अमेरिका जैसे देश के उपग्रह अन्तरिक्ष में भेज रहे हैं तो दूसरी ओर अभी भी कुछ पढ़े लिखे लोग इन पुरानी परम्पराओं का बोझा ढो रहे हैं। धार्मिक होना कोई बुराई नहीं है पर धार्मिक होकर प्रकृति या जीवों को हानि पहुँचाना बुरी बात जरूर है। अभी हाल ही में मुस्लिम समुदाय द्वारा एक परम्परा के नाम पर करोड़ों-अरबो जीवों की हत्या की गयी है। यहाँ तक बंगलादेश की राजधानी ढाका में तो खून से लाल गलियाँ पूरे विश्व में चर्चा का विषय बन गयीं। कोई पूछे किसलिए? सिर्फ इसलिए ताकि निर्दोष जीवों का रक्त बहाया गया जिससे एक परम्परा जीवित रहे? यदि हाँ तो ऐसी परम्पराओं का क्या लाभ जो खुद के मनोरंजन के लिए दूसरों के प्राण लेती हो? हालाँकि धीरे-धीरे काफी कुछ बदल रहा है। अभी बकरीद पर ही एक मुस्लिम मंच के सह संयोजक हसन कौसर ने केक काटकर ईद मनायी। उनके अनुसार बकरीद पर हजारों जानवरों की कुर्बानी देने की बजाय इन्हें गरीबों को पालने के लिये दान दे दिया जाये तो ज्यादा उचित होगा। कहते हैं समझदारों की दुनिया हो और कोई गलती हो जाये तो कोई दु:ख नहीं किन्तु मूर्खों की दुनिया में वह गलती परम्परा बन जाती है। किसी भी चीज को भेड़ चाल में फंसकर नहीं बल्कि अपनी बुद्धि व विवेक से जान लेना चाहिए और खुद से पूछना चाहिए क्या मैं सही कर रहा हूँ? शायद इसके बाद हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं! – ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● **प्रचार संस्करण (अजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● **विशेष संस्करण (सजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

फिर पाकिस्तानी शैतानी

जम्मू-कश्मीर में एक बार फिर सेना के मनोबल पर प्रहार किया गया जिससे 17 सैनिक शहीद हो गए और 20 अन्य घायल हो गए। हमले में घायल हुए 20 सैनिकों में से 7 की हालत गंभीर बनी हुई है। इसे साफ-साफ भारत पर पाकिस्तान का हमला भी कहा जा सकता है। एक बार फिर सोशल मीडिया पर निंदा आलोचना का ट्रेंड देखने को मिलेगा, हमलावरों के प्रति रोष व्यक्त किया जायेगा, एक बार फिर सूखी आँखों से नम और अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि का नाट्य रूपांतरण सा होता दिखाई देगा। न्यूज रूम में टाई लगाये वे पत्रकार बंधु जो बुरहान वानी को गरीब माँ का बेटा बता रहे थे। ब्रेक ले-लेकर न्यूज रूम से आतंक के खिलाफ युद्ध छेड़ते नजर आयेंगे, एक बार फिर स्टूडियों में भारत पाकिस्तान की मिसाइल सैन्य क्षमता का आकलन होगा। हथियार और पैदल सेना की गिनती होगी। कुछ दिन बाद कोई नई खबर आ जाएगी या तो दलितों पर हमला हो जायेगा या बीफ पर बहस छिड़ जाएगी! नहीं तो मुस्लिम भारत माँ की जय क्यों बोलें। यह सबसे बड़ा सवाल बन जायेगा। मतलब एक पुरानी परम्परा को जीवित रखने का कार्य जारी रहेगा। इसके कुछ दिन बाद फिर शांति वार्ता की मेज से धूल झाड़ने का काम होता दिखाई देगा ताकि पाकिस्तान की गोद में बैठकर अलगावादी नेता उस पर कोहनी टिका कश्मीर को बंटवारे का धंधा बना सकें। पूर्व की भांति हल कुछ नहीं होगा। कुछ दिन बाद सैनिको की जगह नये सैनिक ले लेंगे और जन्नत के नाम पर नये आतंकी खड़े हो जायेंगे। सिलसिला चलता रहेगा और पाकिस्तान इस धारणा को मजबूत करता रहेगा कि कश्मीर बनेगा पाकिस्तान।

कल जिस माँ ने पुत्र खोया है उस माँ की छाती जरूर फटी होगी, दुनिया उस बाप की भी लुटी होगी जिसने अपना सहारा खोया है; दर्द की सुई एक पत्नी और उस संतान के तन-मन में चुभी होगी जिनकी मांग का सिंदूर और जिनके सिर से बाप का साया हटा है। यदि कुछ नहीं होगा तो उन लोगों को जिन्होंने कश्मीर को कब्रिस्तान बना डाला। सालों से अलगावादी नेताओं का चेहरा बेनकाब हो चुका है कि वे किस तरह हमारे दुश्मन देश से मिलकर हमारी संप्रभुता अखंडता पर चोट कर रहे हैं। महाभारत युद्ध के दौरान कई बार कृष्ण ने अर्जुन से परंपरागत नियमों को तोड़ने के लिए कहा जिससे धर्म की रक्षा हो सके। जो अधर्म के रास्ते पर चलेगा उसका सर्वनाश निश्चित है, फिर चाहे वह कोई भी व्यक्ति क्यों न हो। कर्ण गलत नहीं थे सिर्फ उन्होंने गलत का साथ दिया था। अब केवल अकर्मण्य बने रहने का खतरा हम और अधिक दिनों तक नहीं उठा सकते हैं। भारतीय जवाबी कार्यवाई कड़ी होनी चाहिए। प्रतिकार जल्द और कड़ा होना चाहिए। एक तरफ हम लोग विश्व शक्तियों के साथ भारत की तुलना करते नहीं थकते, दूसरी और देखें तो हम इतने कमजोर राष्ट्र बन चुके हैं कि अपने हितों पर होती चोट पर निंदा से ज्यादा कभी कुछ नहीं कर पाते। यदि हमें निंदा से ही काम चलाना है तो फिर इस हथियार की होड़ से बाहर आना चाहिए या फिर अब हमें श्रीलंका जैसे छोटे देश से सीखना चहिये कि किस तरह उन्होंने लिट्टे जैसे मजबूत आतंकी नेटवर्क के ढांचे को नेस्तनाबूद किया, हमें इजराइल से सीखना चाहिए कि अपने दुश्मनों के बीच रहकर अपना स्वाभिमान कैसे बचाया जाता है। चीन अक्सर कहता रहा है कि वह अपने नागरिकों को अपनी आस्थाओं के लिए व्यापक स्वतंत्रता देता है पर सब जानते हैं कि चीन सरकार अपने सभी धार्मिक समूहों पर कड़े नियंत्रण रखती है, लेकिन हमारी 125 करोड़ से ज्यादा आबादी की सरकार चंद अलगावादी नेताओं से निपटने में अक्षम दिखाई दे जाती है। क्या यह साधन की कमी है या इच्छाशक्ति की? यह बात भारत सरकार को स्पष्ट करनी चाहिए।

....सालों से अलगावादी नेताओं का चेहरा बेनकाब हो चुका है कि वे किस तरह हमारे दुश्मन देश से मिलकर हमारी संप्रभुता अखंडता पर चोट कर रहे हैं। महाभारत युद्ध के दौरान कई बार कृष्ण ने अर्जुन से परंपरागत नियमों को तोड़ने के लिए कहा जिससे धर्म की रक्षा हो सके। जो अधर्म के रास्ते पर चलेगा उसका सर्वनाश निश्चित है, फिर चाहे वह कोई भी व्यक्ति क्यों न हो। कर्ण गलत नहीं थे सिर्फ उन्होंने गलत का साथ दिया था। अब केवल अकर्मण्य बने रहने का खतरा हम और अधिक दिनों तक नहीं उठा सकते हैं। भारतीय जवाबी कार्यवाई कड़ी होनी चाहिए। प्रतिकार जल्द और कड़ा होना चाहिए। एक तरफ हम लोग विश्व शक्तियों के साथ भारत की तुलना करते नहीं थकते दूसरी और देखें तो हम इतने कमजोर राष्ट्र बन चुके हैं कि अपने हितों पर होती चोट पर निंदा से ज्यादा कभी कुछ नहीं कर पाते।....

म्यूनिख ओलिंपिक खेलों के दौरान 11 इजराइली एथलीटों को बंधक बनाया और बाद में सबकी हत्या कर दी गई। बंधकों को छुड़ाने की कोशिश में वैस्ट जर्मनी द्वारा की गई कार्यवाई में 5 आतंकी मारे गए। लेकिन इसके बाद बाकी बचे तीन आतंकियों, जिनमें इस साजिश का मास्टरमाइंड भी शामिल था, को वहां की खुफिया एजेंसी मोसाद ने सिर्फ एक महीने के अंदर ही ऑपरेशन चलाकर न सिर्फ खोजा बल्कि मार भी गिराया। इजराइल ने हमले की निंदा नहीं की बस प्रतिकार किया। 2004 में हमास के प्रमुख नेता एज्ज अल-दीन शेख खलील को सीरिया की राजधानी दमिश्क में मारा, 2008 में हिजबुल्ला के प्रमुख नेता इमाद मुघनियाह को दमिश्क में मौत के घाट उतारा, 2008 में सीरिया न्यूक्लियर प्रोग्राम के प्रमुख मोहम्मद सुलेमान को तारतुस में मारा और 2010 में दुबई में हमास के प्रमुख नेता महमूद-अल-मबहू को मौत की नींद सुला दिया। यानी इजराइल का दुश्मन दुनिया में कहीं भी छिपकर बैठा हो, मोसाद उसे उसके अंजाम तक पहुंचाकर ही दम लेता है। भारत ने अगर अपने दुश्मनों को खुद ही मारना नहीं सीखा तो आने वाले समय में भी उसे आतंकी हमलों का दर्द झेलना होगा और वह सिर्फ मोस्ट वान्टेड आतंकियों की लिस्ट ही सौंपता रह जाएगा।

आये दिन जवानों के धैर्य पर हमला होता है, कभी बोडों आतंक के जरिये तो कभी नक्सलवाद के जरिये, कश्मीर का हाल तो किसी से छिपा नहीं वहां तो जवान गाली और गोली दोनों खा रहे है। कश्मीर में हर एक घटना के बाद नेहरू और पाकिस्तान को दोषी ठहराकर पल्ला झाड़ लिया जाता है। चलो मान लिया कश्मीर समस्या नेहरु की देन है जिस कारण वहां सैनिक मर रहे हैं किन्तु नक्सलवादी और बोडों द्वारा मारे जा रहे सैनिक किसकी गलती का परिणाम है? इस पर कोई चर्चा करने को तैयार नहीं होता। कोई भी देश वीरता के साथ जन्म लेता है और कायरता के साथ मर जाता है, अत्यधिक शांति भी कायरता की जननी होती है, शांति के लिए यदि युद्ध जरूरी हो तो युद्ध भी करना चाहिए। सौ दिन बेगुनाहों का रुदन सुनने से बेहतर है एक दिन गुनहगारों की चीख सुन ली जाये, जिसका सबसे बड़ा उदाहरण इसी देश में सन् चौरासी का आपरेशन ब्लू स्टार है। जिस तरह कभी पंजाब की गलियों में खालिस्तानी अलगाव की आवाज गूंजती थी। आज उसी तरह कश्मीर के चप्पे-चप्पे पर अलगावादी मानसिकता से प्रेषित लोग आजादी के नारे और पत्थर लिए खड़े हैं और उनकी लिस्ट लिए सरकार डोल रही है लेकिन कभी उनकी लिस्ट नहीं बनती जो इन लोगों के हाथ में पत्थर थमा रहे हैं यदि उनकी लिस्ट बनती भी है तो उन्हें सरकारी सुरक्षा के साथ संरक्षण मिलता रहता है। यह दोहरा मापदंड किस लिए? आज कश्मीर में कदम-कदम पर पनप रहे मदरसे आखिर कौनसी शिक्षा का केंद्र है? सामाजिक समरसता, व्यावसायिक या जेहादी, अलगावादी शिक्षा के? यह भी जाँच का विषय होना चाहिए।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

संन्यासी के लिए तीन आज्ञाएं

महाराज गोपीचन्द अपने देश में शासन करते थे। प्रत्येक सुख विद्यमान था। तभी गुरु गोरखनाथ घूमते-घूमते राजा के महल में जा पहुँचे। राजा ने उनका उपदेश सुना तो वैराग्य हो गया। अपनी माता से बोले-''माँ! मैं संन्यास लेना चाहता हूँ।''

माँ ज्ञानवती थी। उसने कहा-''यदि तेरा मन दृढ़ है तो अवश्य ले ले संन्यास, परन्तु पहले अपने गुरु के साथ कुछ समय रहकर देख। यदि समझे कि मन को शान्ति मिलती है तो संन्यासी हो जाना।''

गोपीचन्द ने ऐसा ही किया। राज्य त्यागकर गुरु के साथ चल पड़े। प्रभु-भजन का आनन्द आया तो अपना वेष भी बदल लिया; संन्यासी हो गये। देश-देश में घूमते हुए वे फिर अपने देश में वापस आये तो भिक्षा का पात्र लेकर महल में पहुँचे। जाकर आवाज दी- ''अलख निरंजन!''

माँ ने इस आवाज को सुना। भागती हुई द्वार पर आई। आश्चर्य के साथ बोली-'' अरे गोपी!'' गोपीचन्द भिक्षा के पात्र को आगे करके बोले-''माँ! मैं भिखारी हूँ, भिक्षा लेने आया हूँ।''

माँ ने सोचते हुए कहा-''ठहर, मैं तुझे भिक्षा दूँगी।'' अन्दर जाकर वह चावल के तीन दाने ले आई। एक-एक करके तीनों दाने भिक्षा-पात्र में डाल दिये।

गोपीचन्द ने आश्चर्य से उन दानों को देखा; बोले-माँ! मैं इस भिक्षा का अर्थ नहीं समझा?''माँ ने कहा-''नहीं समझा तो सुन! इनमें प्रत्येक दाना एक आज्ञा है। तू संन्यासी हो गया, फिर भी मैं तेरी माँ हूँ। मेरी आज्ञा का पालन करना।''

गोपीचन्द बोले-''क्या आज्ञा है माँ?''

माँ ने कहा-''पहली आज्ञा यह है कि जैसे तू घर में सुरक्षित होकर रहता था, वैसे ही बाहर भी रहना!''गोपीचन्द बोले-''परन्तु यह कैसे हो सकता है माँ? मैं अब राजा नहीं; सिपाही और मंत्री नहीं रख सकता पहरा देने के लिए।''माँ ने कहा-''सिपाही और मंत्रियों की आवश्यकता नहीं, परन्तु स्मरण रखो कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के डाकू हर समय तेरे आसपास रहते हैं। उनसे बचने के लिए सत्संग का, सद् विचार का, सद् आहार का, सद् आचार का किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।''

गोपीचन्द ने पूछा-'' और दूसरी आज्ञा?''माँ ने कहा-''यह कि यहाँ घर में तेरे लिए जिस तरह नाना प्रकार के भोजन तैयार होते थे और स्वाद में खाता था, उसी प्रकार जंगल में खाना!''

गोपीचन्द बोले-''परन्तु जंगल में ऐसा भोजन बनायेगा कौन?''माँ ने कहा-''जब तू दिनभर परिश्रम करेगा, योगाभ्यास करेगा, तब भूख खूब चमकेगी। जो रूखा-सूखा खायेगा, उसी में तुझे रसभरे पकवानों का स्वाद आयेगा। स्वाद पकवानों में नहीं भूख में हैं।''

गोपीचन्द ने कहा-''तीसरी आज्ञा?'' माँ ने कहा-''घर में तेरे पास कितने ही नौकर-चाकर थे। सुन्दर झूले में झूलता था। सेवक सेवा करते थे। दासियाँ गीत गाती थीं। उनकी मधुर ध्वनि से तू गहरी नींद में सो जाता था। उसी प्रकार वन में भी गहरी नींद सोना!''गोपीचन्द बोले-''यह कैसे होगा?'' माँ ने कहा-''जब तेरे विचार अच्छे होंगे, जब योग के आसनों से तेरा शरीर थक जायेगा और ध्यान लगाकर मन थक जायेगा, तब गहरी निद्रा आयेगी अवश्य। नींद नौकरों के कारण नहीं आती, थकावट के कारण आती है।''

ये तीन आज्ञाएँ गोपीचन्द की माता ने उसको दीं।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आदिवासी समाज और ईसाइयत

– डॉ. विवेक आर्य

भारत जैसे बड़े देश में करोड़ों लोग वनक्षेत्र में सदियों से निवास करते हैं। कुछ लोग उन्हें आदिवासी कहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि आदिकाल में सबसे प्रथम जनजाति इन्हीं के समान थी। कालांतर में लोग विकसित होकर शहरों में बसते गए जबकि आदिवासी वैसे के वैसे ही रहे। हम इसे भ्रान्ति मानते हैं। इसलिए आदिवासी के स्थान पर वनवासी उपयुक्त शब्द है। भारत में अधिकांश आदिवासी समाज झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल और पूर्वोत्तर आदि राज्यों में रहते हैं। यह जनता अत्यंत निर्धन, शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा आदि सुविधाओं से वंचित है। भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी विकास से कोसों दूर है। ऐसे में ईसाई मिशनरियों के लिए यह अत्यंत उपजाऊ खेत हैं जिसमें ईसा मसीह की खेती की जा सके। यह स्थिति आज एकदम से नहीं बनी है। इसे अत्यंत सुनियोजित रूप में अंग्रेज सरकार, ईसाई चर्च और अंग्रेज व्यापारियों ने मिलकर पिछले 200 वर्षों में निर्मित किया। 1857 में प्रथम संघर्ष के असफल होने के पश्चात् हजारों कारण हजारों क्रांतिकारियों ने जंगलों को अपना घर बनाया और छापेमार युद्ध के माध्यम से अंग्रेजों और उनके खुशामदियों को बेचैन करने लगे। अंग्रेजों ने तंग आकर 1871 में क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट (Criminal Tribes Act) के नाम से कानून बनाकर वनवासी सत्याग्राहियों को ठगा, लुटेरा आदि घोषित कर दिया। वनवासी प्रमुखों को उनके क्षेत्र से बाहर जाने की मनाही कर दी और हर वनवासी को प्रति सप्ताह स्थानीय थाने में जाकर हाजिरी लगाने के लिए बाध्य कर दिया गया। सरकार का जिसका मन होता उसे जेल में डाल देती अथवा फांसी से लटका देती। अंग्रेजों के इस अत्याचार का विरोध मध्य भारत में बिरसा मुंडा और बांसवाड़ा, राजस्थान में गोविन्द गुरु जैसे महानायकों ने किया। सरकार का इस दमन नीति के पीछे दो उद्देश्य थे। पहला 1857 की क्रांति को दोबारा न होने देना दूसरा ईसाई मिशनरियों के लिए उपजाऊ जमीन तैयार करना। आदिवासी समाज में गरीबी पहले से ही थी। ऊपर से अंग्रेजों के कुप्रबंधन के कारण अकाल, प्लेग आदि प्राकृतिक विपदा ने भारतवासियों की कमर ही टूट गई। वनवासी इलाकों में ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा, चिकित्सा, नौकरी आदि की आड़ में पैर पसारने आरम्भ कर दिए। सरकार ने ईसाई मिशनरियों की सहायता के लिए यह घोषणा कर दी कि जो कोई निर्धनों की सेवा करेगा उसे सरकारी अनुदान दिया जायेगा। यथार्थ में यह अनुदान केवल चर्च और उससे सम्बंधित ईसाई संस्थाओं को दिया जाता था। इस अनुदान के दम पर चर्च प्राकृतिक विपदा में अनाथ हुए बच्चों को गोद लेता था और विधवाओं को आश्रय देता। इन सभी को चर्च धर्मान्तरित कर ईसाई पादरी अथवा प्रचारक बना देता। इनका कार्य विभिन्न जंगली इलाकों में जाकर अपने समान देखने वाले आदिवासियों को ईसाई बनाना था। चर्च को अनुदान देने के लिए सरकार को धन व्यापारी वर्ग मुहैया करवाता था। अंग्रेज व्यापारियों की नीति बड़ी सुनियोजित थी। चर्च उनके लिए ईसाई धर्मान्तरण करेगा। धर्मान्तरित व्यक्ति का केवल धर्म परिवर्तन ही नहीं होगा। उसकी सोच, भाषा, संस्कृति, जीवन का उद्देश्य, जीवन शैली सब कुछ परिवर्तित हो जायेगा। धर्मान्तरित होने वाला व्यक्ति हिंदुस्तानी धोती-कुर्ता के स्थान पर अंग्रेजी पेंट और जूते पहनेगा। सर पर हैट लगाएगा। अंग्रेजी पुस्तकें पढ़ेगा और अंग्रेजी में बोलेगा। इन सभी उत्पादों का उत्पादन अंग्रेज व्यापारी करेगा। इस प्रकार से अंग्रेज व्यापारियों को अपना सामान बेचकर लाभ कमाने के लिए समुचित चिरस्थायी बाजार मिलेगा। बदले में अंग्रेज सरकार को एक ऐसी जमात मिलती जो दिखने में तो हिंदुस्तानी होती मगर अंग्रेज सरकार की हर सही या गलत नीति का समर्थन अंधभक्ति के समान करती । जो किसी भी स्थानीय विद्रोह में अपने ही हिंदुस्तानी भाइयों के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ देती। जो अपने हिंदुस्तानी भाइयों को नीचा और अंग्रेजों को उच्च समझती। इससे अंग्रेजी राज सदा के लिए उस देश में राजदृढ़ हो जाता। इस प्रकार से ईसाई चर्च, अंग्रेज सरकार और अंग्रेज व्यापारी तीनों को हर प्रकार से लाभ होता। वर्तमान में भी चर्च ऑफ इंग्लैंड का करोड़ों पौण्ड बहुराष्ट्रीय कंपनियों में लगा हुआ है। चर्च कंपनियों के माध्यम से जिन देशों में धन कमाता है उन्हीं देशों को उन्हीं का धन चर्च में दान के नाम पर वापस भेजता है। इसे कहते है 'मेरा ही जूता मेरे ही सिर।'

विदेशी सोच वाले विदेशी का तो भला हो गया मगर हमारे निर्धन,अशिक्षित, वंचित देशवासियों को क्या मिला। यह चिंतन का विषय है। काले अंग्रेज बनने और गले में क्रॉस टांगने के पश्चात् आदिवासियों की जीवन शैली में व्यापक अंतर आया। पहले वह स्थानीय भूदेवताओं, वनदेवताओं आदि को मानते थे। अब वे ईसा मसीह को मानने लगे। आदिवासियों में शिक्षा चाहे कम थी। मगर धार्मिक सदाचार उनकी जीवन शैली का अभिन्न अंग था। भूदेवता कहीं रुष्ट न हो जाये, इसलिए अशिक्षित आदिवासी पाप-पुण्य का विचार करता था। भूदेवताओं के नाराज होने से प्राकृतिक विपदा न आये। इसलिए वह किसी को सताने में विश्वास नहीं रखता था। भूदेवताओं का भय ईसाई बनने के साथ समाप्त हो गया। उसके स्थान पर पाप क्षमा होने की मान्यता प्रचलित हो गई। सारा दिन पाप करो और सांय जाकर चर्च में पापों को स्वीकार कर लो। सभी पाप क्षमा हो जायेंगे। अच्छा तरीका मिल गया। ईसाई बने आदिवासियों में बड़ी तेजी से व्यभिचार, शराब आदि नशे की लत, कुटिलता, झूठ-फरेब, तलाक आदि फैल गए। उत्तर पूर्व भारत इस परिवर्तन का साक्षात प्रमाण है। वहां शिक्षा तो है मगर सदाचार नहीं है। आदमी निकम्मे हो चले है क्योंकि नशे ने उनका जीवन बर्बाद कर दिया है जबकि औरतें परिवार का पेट पालने के लिए अकेले संघर्ष कर रही हैं। ऐसे में टूटते परिवार, घरेलू झगड़े, विवाद आदि ने समाज को हिला कर रख दिया है।

मगर ईसाई चर्च को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि उसका राजनीतिक हित सुरक्षित है। सारा ईसाई समाज संगठित होकर पादरी के कहने पर वोट करता है। इसलिए चुनावी मौसम में राजनेता पादरियों के घरों के चक्कर लगाते आसानी से दिख जाते हैं। कुल मिलाकर विदेश में बैठे ईसाई पोप अपनी हिंदुस्तान पादरियों की फौज की सहायता से न केवल राजसत्ता को निर्देश करते हैं, अपितु स्थानीय सरकार में दखल देकर अपने हित के कानून भी बनवाते हैं। नागा समस्या आदि इसी सुनियोजित रणनीति का भाग है।

स्थानीय आदिवासियों का जीवन ईसाई बनने से नरकमय हो गया है। उसने सदाचार के बदले केवल व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर ली। मगर ईसाइयत ग्रहण कर उसने अपना मूलधर्म, अपनी सभ्यता, अपने पूर्वजों का अभिमान, अपनी मानसिक स्वतंत्रता, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपनी जीवन शैली, अपना गौरवान्वित इतिहास, अपना धर्म खो दिया।

हिन्दू समाज का कर्त्तव्य ऐसे परिवेश में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिन्दू समाज ने कुछ अनाथालय, शिक्षा के लिए विद्यालय तो अवश्य खोले मगर वह अल्प होने के कारण प्रभावशाली नहीं थे। हिन्दू समाज में संगठन न होने के कारण कोई भी हिन्दू नेता शुद्धि कर परिवर्तित आदिवासियों को वापस शुद्ध करने में प्रयासरत नहीं दीखता। हिन्दू समाज के धर्माचार्य, मठाधीश बनकर मौज करने में अधिक रुचि रखते हैं। ऐसी समस्याओं पर विचार करने का उनके पास अवकाश नहीं है। हिन्दू समाज का धनी वर्ग धर्म के नाम पर दिखावे जैसे तीर्थ यात्रा, साईं संध्या, विशालकाय संगमरमर लगे मंदिर, स्वर्ण और रत्न जड़ित मूर्तियों में अधिक रुचि रखता है। जमीनी स्तर पर निर्धन हिंदुओं का सहयोग करने का उसे कोई धर्माचार्य मार्गदर्शन नहीं करता। एक अन्य हिन्दू समाज का धनी वर्ग है जिसे मौज-मस्ती सैर सपाटे से फुरसत नहीं मिलती। इसलिए ऐसे ज्वलंतशील मुद्दों पर उसका कोई ध्यान नहीं है। इस व्यथा का मुख्य कारण ईसाई समाज द्वारा संचालित कान्वेंट स्कूलों में मिली शिक्षा है। जिसके कारण वे लोग पूरे सेक्युलर होकर निकलते हैं।

ईसाईयों ने आदिवासी समाज का नाश केवल भारत में ही नहीं किया। एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका सभी स्थानों पर अपनी चतुर रणनीति, दूरदृष्टि , सुनियोजित प्रयास, एक दिशा, संघठित होने के कारण पूरे विश्व पर आधिपत्य बनाया है। हमने समय रहते इस रणनीति से सीख ली होती तो आज हमारे देश के आदिवासी मानसिक गुलाम और विदेशियों की कठपुतली नहीं बनते।

....भारत में अधिकांश आदिवासी समाज झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल और पूर्वोत्तर आदि राज्यों में रहते हैं। यह जनता अत्यंत निर्धन, शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा आदि सुविधाओं से वंचित है। भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी विकास से कोसों दूर है। ऐसे में ईसाई मिशनरियों के लिए यह अत्यंत उपजाऊ खेत हैं जिसमें ईसा मसीह की खेती की जा सके। यह स्थिति आज एकदम से नहीं बनी है। इसे अत्यंत सुनियोजित रूप में अंग्रेज सरकार, ईसाई चर्च और अंग्रेज व्यापारियों ने मिलकर पिछले 200 वर्षों में निर्मित किया।....

प्रेरक प्रसंग

वे ऐसे व्यक्ति थे!

1908 की घटना होगी। पंजाब विश्वविद्यालय सैनिट के चुनाव हुए। डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर के प्राचार्य महात्मा हंसराज जी को भी प्रबन्ध समिति ने चुनाव के अखाड़े में उतरने के लिए कहा। वे पहले भी सैनिट के सदस्य थे। उन्होंने चुनाव लड़ा, परन्तु सैनिट के चुनाव में हार गये।

उन दिनों डी. ए. वी. कॉलेज की एक पत्रिका निकला करती थी। उसमें कॉलेज के समाचार भी छपा करते थे। एक समाचार यह भी छपा कि कॉलेज के प्राचार्य हंसराज चुनाव हार गये हैं।

पाठक वृन्द! क्या आज कोई छोटा-बड़ा व्यक्ति चुनाव हार जाने पर अपनी ही पत्रिका में ऐसा समाचार देने का नैतिक साहस दिखा सकता है? जिन विभूतियों ने आर्यसमाज के कीर्ति-भवन के निर्माण के लिए अपना सर्वस्व दिया, वे ऐसे ही व्यक्ति थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

लिया। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री विनय आर्य तथा श्री वाचोनिधि आर्य ने भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्तमंत्री श्री प्रवीण गोरधन जी थे जिन्होंने समाज में प्रजातन्त्र को मजबूत करने तथा राष्ट्र में नैतिकता, ईमानदारी एवं आध्यात्मिकता को प्रचारित-प्रचारित करने के लिए आर्य समाज को बधाई का पात्र बताया था। अपने उद्‌बोधन में श्री प्रणीण गोरधन ने आर्य समाज द्वारा किये जाने वाले जन-कल्याण कार्यों में भरपूर सहयोग करने का आश्वासन दिया था। सभा प्रधान श्री बिसराम रामविलास ने एक महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'तृप्ति' के विषय में बताते हुए कहा कि ये प्रोजेक्ट उन ग्रामीण क्षेत्रों को ट्यूबेल लगाकर जहां सूखा पड़ा है और ग्रामीणों को पानी उपलब्ध नहीं है उन्हें नि:शुल्क पानी उपलब्ध करायेगा। तृप्ति प्रोजेक्ट के लिए दिल्ली की ओर श्री विनय आर्य जी ने 20 हजार रेन्ड व वाचोनिधि आचार्य जी ने 10 हजार रेन्ड के आर्थिक सहयोग की घोषणा की थी। आज वही तृप्ति प्रोजेक्ट समय से पूर्व तैयार होकर गरीब जनता को समर्पित कर दिया गया है जिसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल जी, व वाचोनिधि जी आचार्य ने दक्षिण अफ्रीका आर्य समाज के पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित की है। प्रोजेक्ट के लोकार्पण कार्यक्रम में बोलते हुए सभा प्रधान श्री बिसराम रामविलास जी ने कहा 'कि लोगों के उत्साह और सहयोग के चलते यह प्रोजेक्ट समय से पूर्व बन कर तैयार हो गया जिसके लिए मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों एवं उन सभी सहयोगियों का आभारी हूं जिन्होंने बड़े उत्साह से इस प्रोजेक्ट को समय से पूर्व पूरा करने में सहयोग किया।'

- डॉ. बिसराम रामबिलास,
प्रधान, आर्य प्र. सभा, द. अफ्रीका

तृप्ति परियोजना के लोकार्पण समारोह के अवसर पर यज्ञ। फोउमोवाके के बच्चे राष्ट्रीय गीत गाते हुए। माजिन्दी प्राईमरी स्कूल में बोरवैल की स्थापना के अवसर पर सभा अधिकारियों के साथ विद्यालय के बच्चे। (नीचे) माजिंदी समुदाय के साथ भूमि की निराई, सिंचाई करते अधिकारी।

ग्रेटर नोएडा में राष्ट्रीय पुस्तक मेला सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया वैदिक साहित्य प्रचार

एन.बी.टी. द्वारा ग्रेटर नोएडा में राष्ट्रीय पुस्तक मेला 12 से 18 सितम्बर, 2016 तक इण्डिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमि., नॉलेज पार्क में आयोजित किया गया। इस पुस्तक मेले में भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए स्टाल लगाया। पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य के स्टाल पर अधिकांश भीड़ छात्र-छात्रों व महिलाओं की देखने को मिली। मेले में वैदिक साहित्य स्टाल को आयोजित कराने में श्री राजेन्द्र आर्य जी की विशेष भूमिका रही।

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

पं. विजय शंकर जी से सत्यार्थ प्रकाश कथा सुनकर बना आर्यसमाजी

- देशराज छाबड़ा

संस्कारवश बपचन में मैं मूर्तिपूजा, चित्र पूजा और पुस्तक पूजा में बहुत विश्वास करता था। मेरे पास एक होल्डर (Holder) था जो अब लुप्त हो गये हैं। उनका स्थान अब पैनों ने ले लिया है। होल्डर पर विष्णु का चित्र बना हुआ था। मैं प्रतिदिन होल्डर के आगे माथा टेकता था। यह देखकर मेरे भाई ने एक चित्र ला दिया। अब मैं उसके आगे माथा टेकने लगा। पहले गुरुद्वारे और फिर मन्दिर जाया करता था।

इस बीच मेरा सम्पर्क एक ऐसे सज्जन से हुआ जो आर्य समाज के पदाधिकारी थे। उनका नाम श्री इकबाल राय बेदी था। वह बहुत ईमानदार व्यक्ति थे। वह आर्य कुमार सभा के माध्यम से स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को व्यायाम कराते थे और सायंकाल संध्या कराते थे। उनके सम्पर्क के कारण मैं आर्यसमाज के सत्संग में गया। कार्यक्रम के अन्त में एक नारा लगा 'भगवान दयानन्द की जय' मैं सुनकर हैरान हुआ कि दयानन्द कौन हैं। धीरे-धीरे मैं आर्य समाज और स्वामी जी को समझने लगा। स्वामी जी की जीवनी पढ़ी। आर्य समाज के सत्संग में जाने लगा। एक विद्वान पं. विजय शंकर जी सरल भाषा में और मधुर शब्दों से सत्यार्थ प्रकाश की कथा किया करते थे। पता ही नहीं चला कि मैं कब मूर्तिपूजा के विरुद्ध हो गया और आर्य समाज के सिद्धान्त मुझे अच्छे लगने लगे।

मेरी माताजी का देहान्त होने पर मेरे बड़े भाई ने गरुड़ पुराण की कथा रखवाई मैं उसमें शामिल नहीं हुआ। मेरे भाई साहब मेरी माताजी की हड्डियां लेकर हरिद्वार गये परन्तु मैं उनके साथ नहीं गया। हमारे घर में श्राद्ध होते थे। ज्यों ही मैं घर का मुखिया बना श्राद्ध के नाम पर पंडितों को मिलने वाली खीर और हलुवा बन्द हो गया।

अब मूर्ति पूजा, चित्र पूजा और पुस्तक पूजा मेरे लिये पूरी तरह से त्याज्य है।

- डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-

'सम्पादक' - साप्ताहिक आर्य सन्देश,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 email : aryasabha@yahoo.com

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Mental Yajna

The devout sacrificer performs fire-ritual daily by lighting fire, cherishing the hope that the burning fire of the sacrificial altar will one day ignite his soul. The spirit of surrender will, surely, exhilarate his thoughts.

Fire-ritual inspires life and helps the growth of self-illumination. It rouses auspicious and divine feelings in the mind of the devotee. The verse says, "O Lord, I am lighting the fire of good thoughts in the altar of self. The spiritual dawn is emerging in my heart. Its shine will kill all my evil thoughts. May I be a part of your divine creation. May I myself be transformed as the pure alter of sacred fire. May divinity flow in me. May that purify my body and mind. As the fire ritual purifies all corners, likewise may the rays of dedication sanctify all my organs of the body. May my body be transformed to a piece of sacred wood meant for fire-ritual. May that be reduced to ashes after emiting fragrance in all directions. May every action of mine echo the spirit of dedication-svaha: I surrender."

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः।। (Sv.19)

Agnim indhano manasa dhiyam saceta martyah.
agnim indhe vivasvabhih..

The Prayer of five Birds

The five sense organs of human body are like birds with wings that acquire sensation of the outer world i.e. seeing, hearing, feeling, taste and smell. The eyes accept the essence of fire, the ears accept the essense of the sky, the skin accepts the essence of air, the tongue receives the essence of water and the nostrils receive the essence of the earth. They establish the continuous relation between the body and the outer world. They collect the sensations and put up to the mind which is the closest aid of the soul. The soul is the ruler of the body. A soulless dead person cannot see even though having eyes nor can he listen in spite of having ears.

The five birds pray to the Master Soul,"You are Indra, our, employer. Utillie us for your progress. Untie our bondage. The bondage of the ears is to crave for listening uncivilized words. The bondage of the eyes is to earnestly desire for seeing unholy scenes. O Soul, alas ! we have no direct communication with you. We pass on each sensation to the mind, your obedient servant. Pray, make the mind stern and resolute so that it does not tempt us to receive polluted and unholy feelings of the outer world. May we be worthy to be called Indriya, the worthy associates of Indra, your good self.

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा श्रृषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्द्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या ३स्मान्निधयेव बद्धान्।। (Sv.319)

Vayah supama upa sedurindram priyamedha rsayo nadhamanah.
apa dhvantamurnuhi purddhi caksurmumugdhya smannidha yeva bddhan.

Four Stages of life

The four stages of human life are figuratively depicted in the verse. The first stage of learning of the student is compared to 'Agni', the fire that represents knowledge and strength; the two basic needs for success in life. After completion of education with austerity, the young people return to the home of their parents. They get married and become house holders, a stage compared to 'Dhenu' or cow. The cow takes ordinary food like grass and yields the nectar of milk. So also does the house-holder take care of the family members as well as all others in the society belonging to the other three stages i.e. students, social workers and ascetics. He provides comforts to all, himself leading a simple life of self-negation.

The third stage of life is compared to a bird. Man moves like a free bird utilizing his knowledge and experience in the selfiless service of society. He visits every house and solves its problems with joy. The last stage is said to resemble the sun. He becomes pure, blameless and well-wisher of everybody free form lust, hatred and anger like the setting sun taking a rest to rise again as a successful person in coming life, pure and saced.

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ।। (Sv.1746)

Abodhyagnih samidha jananam prati dhenum ivayatim usasam.
yahva iva pra vayam ujjihanah prabhanavah sasrate nakam accha..

To be Conti....

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में
वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन

16वां परिचय सम्मेलन	17वां परिचय सम्मेलन
रविवार 6 नवम्बर 2016	रविवार 15 जनवरी, 2017
आर्यसमाज धामावाला देहरादून (उत्तराखण्ड)	आर्यसमाज अशोक विहार-1 दिल्ली-110052

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **16वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** आर्यसमाज धामावाला देहरादून उत्तराखण्ड में 6 नवम्बर 2016 तथा **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 15 जनवरी, 2017 आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

इससे पूर्व अभी तक सम्पन्न हुए 15 सम्मेलनों के आशातीत एवं सार्थक परिणाम सामने आए हैं। आर्य परिवार परिचय सम्मेलनों को लेकर आर्य जनों में काफी उत्साह है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिएं जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फार्म इसी पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया है। फार्म की फोटोप्रति भी मान्य है। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता हैं तथा **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भरकर पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए प्रदेश संयोजक अथवा राष्ट्रीय संयोजक से सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा	**एस. पी. सिंह**	**डॉ. विनय विद्यालंकार**
राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक, दिल्ली	संयोजक, उ.खण्ड
मो. 9414187428	**9540040324**	**मो. 09412042430**

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता .....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसायः ..... मासिक आय.....
7. पूरा पताः.....

दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....

8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं ? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग : ☐
14. विशेषः किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: .....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

आप जिस सम्मेलन के लिए फार्म भर रहे है उसी स्थान पर ✓ का निशान लगावे

देहरादून 6 नवम्बर 2016 ☐ परिचय सम्मेलन 6 नवम्बर 2016, रविवार, आर्य समाज, धामा वाला, अस्पताल रोड़, देहरादून (उत्तराखंड) में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा (09414187428) अथवा डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रान्तीय संयोजक (09412042430), डॉ.महेश कुमार शर्मा प्रधान आर्यसमाज (09411101141), श्री नवीन भट्ट मंत्री आर्य समाज (09837064155), श्री ज्ञानचन्द आर्य (09897346730) से सम्पर्क करें।

नई दिल्ली 15 जनवरी 2017 ☐ परिचय सम्मेलन 15 जनवरी 2017, रविवार, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज 1,F-5 नई दिल्ली-110052 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा (09414187428) अथवा दिल्ली के संयोजक श्री एस. पी. सिंह (09540040324) श्री प्रेम सचदेवा, प्रधान आर्य समाज अशोक विहार (09811122320), श्री जीवन लाल आर्य - मंत्री- अशोक विहार (09718965775) से सम्पर्क करें।

नोट :1. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
3. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।** यहफार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक matrimony.thearyasamaj.org
4. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रू. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट प्रति सम्मेलन के हिसाब से संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
5. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लेकर लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज सी.पी. ब्लाक का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर सी.पी. ब्लॉक, मौर्य एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-34 में दिनांक 21 से 25 सितम्बर 2016 के मध्य अपना वार्षिकोत्सव वैदिक विदूषी डॉ. अन्नपूर्णा जी (देहरादून) के पावन सान्निध्य में चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ एवं आध्यात्मिक प्रवचन के साथ आयोजित कर रहा है। प्रभात फेरी 17 सितम्बर प्रात: 6 बजे आर्य समाज से आरम्भ हुई। -**सोहनलाल आर्य, मंत्री**

133वां ऋषि बलिदान समारोह

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में 4 से 6 नवम्बर 2016 तक 133वां ऋषि बलिदान समारोह आयोजित कर रहा है जिसके अन्तर्गत ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेद गोष्ठी, ऋषि मेला, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता का आयोजन होगा।

इससे पूर्व 12 से 19 अक्टूबर 2016 तक योग-साधना शिविर का आयोजन होगा। अधिक जानकारी के लिए 0145-2460164 पर सम्पर्क करें।

- डॉ. धर्मवीर, प्रधान

आर्यसमाज राधापुरी का 61वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज राधापुरी, दिल्ली-51 का 61वां वार्षिकोत्सव 2 अक्तूबर को प्रात: 7:30 से 2:30 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर 25 सितम्बर, 2016 को प्रभातफेरी भी निकाली जाएगी।

- ऋषिराज वर्मा, मन्त्री

आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

नव निर्मित भवन का उद्घाटन

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, मालवीय नगर, अलवर के नव निर्मित भवन का उद्घाटन 27 अगस्त 2016 को लोकायुक्त राजस्थान श्री सज्जन सिंह कोठारी द्वारा किया गया।

- कमला आर्या, निदेशक

आर्य समाज एटा (उ.प्र.) का 131वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज एटा (उ.प्र.) का 131वां वार्षिकोत्सव दिनांक 1 से 4 अक्टूबर 2016 के मध्य आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज मार्ग, मेहता पार्क एटा में आयोजित किया जा रहा है। *-प्रताप सिंह वर्मा, मंत्री*

आर्यसमाजों का निरीक्षण कार्य आरम्भ

ह्नदिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 21 अगस्त, 2016 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली स्थिति समस्त आर्यसमाजों का निरीक्षण कार्य आरम्भ कर दिया गया है। इस हेतु प्रत्येक निरीक्षक महानुभाव को 4 आर्यसमाजों की जिम्मेदारी दी गई तथा तथा प्रत्येक 10-12 आर्यसमाजों पर एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति की गई है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों को उनके यहां आने वाले निरीक्षक एवं उनके पर्यवेक्षक के नाम एवं सम्पर्क सूत्र की सूचना भेजी जा रही हैं। यदि किसी आर्यसमाज को पत्र प्राप्त न हो तो निरीक्षक सम्बन्धी जानकारी के लिए **महामन्त्री श्री विनय आर्य (9958174441)** अथवा **श्री अशोक कुमार जी (9540040322)** से सम्पर्क करें। सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे निरीक्षक महानुभाव को सभी जानकारियां सहर्ष उपलब्ध कराएं। आपसे यह भी निवेदन है कि निरीक्षण कार्य में सहयोग हेतु आप अपनी आर्यसमाज की ओर से एक अधिकारी की नियुक्ति करें और उनका नाम एवं नं. अपने निरीक्षण महानुभाव को नोट करा देवें जिससे वे सीधे उनसे सम्पर्क करके आर्यसमाज में पहुंचे और निर्दिष्ट सूचनाएं फार्म में अंकित कर लेवें। - **महामन्त्री**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल :20-22 अक्टूबर,16 आवश्यक सूचना

1. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले/भाग लेने के इच्छुक वे सभी आर्य महानुभाव, जो अपने साधनों से नेपाल पहुंचेंगे तथा अपनी आवास व्यवस्था भी स्वयं ही करेंगे, से निवेदन है कि वे अपना पंजीकरण अवश्य करा लवें तथा पंजीकरण राशि सार्वदेशिक सभा में अवश्य जमा करवा देंवें। आपसे यह भी निवेदन है कि आप किस माध्यम से, कब और कितने बजे नेपाल पहुंच रहें हैं उसकी सूचना सार्वदेशिक सभा कार्यालय को पत्र द्वारा अथवा ईमेल द्वारा अवश्य भेजें। आपकी सूचना के अभाव में नेपाल में सुव्यवस्था सम्भव नहीं हो सकेगी।

2. सार्वदेशिक सभा के माध्यम से नेपाल महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों के लिए एक और यात्रा विकल्प तैयार किया गया है- **यात्रा नं. 2(C)**

इस यात्रा विकल्प में भाग लेने वाले महानुभाव यात्रा 1 (ए) 22000/- रुपये के समान **सम्मेलन के दिनों में अतिथि भवनों में ठहरेंगे तथा पोखरा भ्रमण के समय 3 सितारा होटलों** में रहेंगे। इस यात्रा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों को **31500/- रुपये** का बैंक ड्राफ्ट '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम बनवाकर यथाशीघ्र '***श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001***' के पते पर निर्धारित आवेदन पत्र एवं अपने एक फोटो पहचान पत्र - पासपोर्ट/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की फोटो प्रति के साथ भेजें। आवेदन पत्र www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए **श्री एस. पी. सिंह (9540040324)** से सम्पर्क करें।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री (9826655117)

आर्य समाज उदयपुर का वेद प्रचार सप्ताह धूम धाम से सम्पन्न

आर्यसमाज उदयपुर का वेद् प्रचार सप्ताह 29 अगस्त से 4 सितम्बर 2016 तक मनाया गया। स्थानीय भजन गायक श्री इन्द्रदेव पीयूष जी ने ईश्वर भक्ति व मुख्य वक्ता आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी ने ईश्वर व जीव का सम्बन्ध, मानसिक वाचिक शारीरिक दुर्गुण, धरती पर शांति के उपायों को विभिन्न वेद मंत्रों के माध्यम से सब के बीच रखा।

बार एसोसिएशन के विशाल सभागार में करीब 250 महानुभावों की उपस्थिति में न्याय एवं नैतिकता विषय पर आचार्य जी का व्याख्यान आयोजित हुआ। आर्य समाज की ओर से बार एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री भरत जोशी, उपाध्यक्ष श्री गोपाल सिंह चौहान सहित अनेक वरिष्ठ अधिवक्ताओ को सत्यार्थ प्रकाश तथा कुछ अन्य वैदिक साहित्य नि:शुल्क वितरित करवाया गया।

-सत्यप्रिय आर्य मन्त्री

आर्य वधु चाहिएं

30 वर्षीय, 5'10'' एम.ए., पी.एच.डी., वार्षिक आय 10 लाख रुपये, योगा टीचर मुम्बई में कार्यरत।

27 वर्षीय, 5'8'', डबल एम.ए,एम.एड., वार्षिक आय 10 लाख रुपये, योगा टीचर मुम्बई में कार्यरत।

25 वर्षीय, 5'9'', वार्षिक आय 5 लाख रु., एन.डी.आर.एफ. कटक (ओडिशा) में कार्यरत।

तीनों आर्य युवकों के लिए आर्य विचारधारा वाली आर्य परिवार की कन्याएं चाहिएं। जाति बन्धन कोई नहीं। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें:-

- श्री राम मूरत आर्य,
रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर
मो. 9415535059, 7666666991

वधू चाहिए

आर्य परिवार का सुन्दर, गौरवर्ण, शाकाहारी गर्ग कद 5'9'', बी.टेक(सी.एस.ई.), आयु: 26 वर्ष, गुड़गांव एम.एन.सी.में सीनियर सॉफ्टवेयर डैवलपर, आय: 8 लाख प्रतिवर्ष, बराडा जिला अम्बाला निवासी को सुन्दर, गोरी, कार्यरत आर्य परिवार की कन्या चाहिए।

- सम्पर्क सूत्र : 094161-87411
Email : arya.travels01@gmail.com

कन्या गुरुकुल नरेला के प्रबन्धक मा. सत्यवीर जी का निधन

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के भानजे और कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली के वर्तमान प्रबन्धक मास्टर सत्यवीर जी आर्य का निधन 20 अगस्त 2016 को उनके निवास स्थान नरेला में हो गया। वे मूलत: मटिण्डू के निवासी थे। 21 अगस्त का नरेला शमशानघाट में उनकी अन्त्येष्टि की गयी।

शोक समाचार

श्री राजीव तलवार जी को पितृ शोक

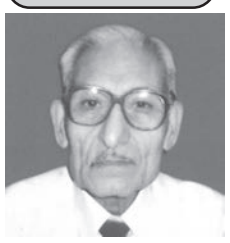

आर्य समाज जनकपुरी बी-2, नई दिल्ली के सदस्य श्री राजीव तलवार जी के पिता श्री प्राणनाथ तलवार जी 19 सितम्बर 2016 को दिवंगत हो गये। वे 87 वर्ष के थे। वे अपने पीछे एक पुत्र एवं एक सुपुत्री का भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

आर्य समाज चेन्नई के संस्थापक श्री जयदेव आर्य दिवंगत

आर्य समाज चेन्नई के तथा चेन्नई डी.ए.वी. विद्यालय समूहों के संस्थापकों में अग्रणीय श्री जयदेव जी का स्वर्गवास 3 सितम्बर 2016 को हो गया। वे 90 वर्ष के थे। श्री जयदेव जी अपने पीछे भरा-पूरा आर्य परिवार को छोड़ गये हैं। जयदेव जी ने दक्षिण भारत में आर्य समाज को एक महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में स्थापित किया। शांति यज्ञ 24 सितम्बर को चेन्नई आर्य समाज में आयोजित की जाएगी।

श्री लक्ष्मण दत्त जी को मातृ शोक

आर्य समाज बिड़ला लाईन्स के सदस्य श्री लक्ष्मण दत्त जी की माता श्रीमती सन्तोष दत्त जी का 16 सितम्बर 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। वे 90 वर्ष की थीं। श्रीमती सन्तोष अपने पीछे पांच पुत्र-पुत्रियों का हंसता-खेलता परिवार छोड़ गई हैं। श्रद्धांजलि सभा 26 सितम्बर 2016 सांय 3-4 बजे पंचायती धर्मशाला 66 ई कमला नगर दिल्ली में होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 सितम्बर से रविवार 25 सितम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 सितम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 सितम्बर, 2016

आर्य समाज रोहिणी सैक्टर-7 का रजत जयन्ती समारोह 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 2016

भव्य शोभायात्रा
25 सितम्बर: सायं 4 बजे से

आर्य महिला सम्मेलन
29 सितम्बर: 2:30 बजे से

25 कुण्डीय महायज्ञ समापन
2 अक्तूबर प्रात: 7:30 से 1:30 बजे
अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल जी
मुख्यातिथि : डॉ. सत्यपाल सिंह जी

यज्ञ-भजन-प्रवचन : प्रतिदन प्रात: 7:30 से 9:15 व सायं : 7-15 से 9:30 बजे
भजन : आचार्य अंकित उपाध्याय जी

29 सितम्बर, 2016 गुरुवार
प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार जी
विषय : वेद औरा मानव जीवन का उद्देश्य

30 सितम्बर, 2016 शुक्रवार
प्रवचन : डॉ. वागीश आचार्य जी
विषय : पति-पत्नी और परिवार

1 अक्तूबर, 2016 रविवार
प्रवचन : डॉ. वागीश आचार्य जी
विषय : सुख और सफलता का आधार

आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। निवेदक :- नरेश पाल आर्य, प्रधान संजीव गर्ग, मन्त्री

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज सागरपुर के तत्त्वावधान में वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न
आर्यसमाज भवनों से बाहर निकलकर करें अपने सभी आयोजन - धर्मपाल आर्य

आर्य समाज सगरपुर नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 15 से 18 सितम्बर 2016 के मध्य संगीतमय वेद कथा का आयोजन कर श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ एवं वेद प्रवचन पं. देशराज सत्येच्छु जी ने प्रस्तुत किये। यह कार्यक्रम नगरवन पार्क में आयोजित किया गया जिसमें हजारों की संख्या में पौराणिकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कथा में दक्षिण दिल्ली के पूर्व सांसद श्री महाबल मिश्रा जी ने उपस्थित होकर भक्तों का उत्साह वर्धन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने विशाल जन समूह को देखते आर्य समाज सागरपुर के पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि यही सही मायने में प्रचार कार्य है जहां पर लगभग 98प्रतिशत नए श्रोताओं की उपस्थिति है। सभा द्वारा इस अवसर पर वैदिक साहित्य स्टाल भी लगाया गया जिसमें सभा की ओर से सस्ते में वैदिक साहित्य उपलब्ध कराया गया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। - ***मानधाता सिंह आर्य, मन्त्री***

स्वास्थ्य चर्चा

यज्ञाहुतियों से भगाएं विभिन्न रोग

⋆यज्ञ में आहुति हेतु प्रयोग किये जाने वाली सामिग्री में रोगनाशक-औषधि-जड़ी-बूटी गिलोय, जटामांसी, नीम पत्ती, अगर, तगर, चन्दन, चिरायता, केशर, आदि से यज्ञ करने पर सभी प्रकार के बुखार दूर होते हैं।

⋆बलवर्धक औषधियां- बादाम, पिस्ता, मुनक्का, अंजीर, छुआरे आदि सामिग्री में मिलाकर यज्ञ करने से यज्ञ में सम्मिलितों व रोगियों की शारीरिक कमजोरी दूर होती है और रोगों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है।

⋆ बुद्धिबर्धक औषधियां- बह्मी, शंखपुष्पी, अखरोट आदि से तैयार सामिग्री से यज्ञ करने पर बुखार के समय होने वाली मानसिक व्याधियां, सिरदर्द, अनिद्रा, चक्कर आना, नींद न आना आदि दूर होती हैं।

⋆ यज्ञ में इस्तेमाल किये जाने वाली सामिग्री में रोगनाशक, बलवर्धक व बुद्धिवर्धक जड़ी बूटियां मिलाने से सभी प्रकार के बुखार उसी प्रकार से दूर हो जाते हैं जैसे औषधियों को हम खाकर लाभ प्राप्त करते हैं, वैसे ही अग्नि में विधि पूर्वक जलाने से और जल्दी सुखद परिणाम आते हैं, जैसे दुर्गंध युक्त मिर्च, प्लास्टिक व अन्य नुकसानदायक पदार्थ जलाऐ जाने पर और अधिक दुर्गंध व रोग पैदा करते है, उसी प्रकार घी चंदन से व अन्य औषधियों से युक्त सामिग्री को आग में मंत्रों के माध्यम से विधि पूर्वक आहुति (जलाना) देने से वातावरण में वायरल बुखार व अन्य घातक संक्रामक रोगों का समूल नाश होता है।

⋆ तो आइये देर न करते हुऐ, भारत की प्राचीन विद्या योग व यज्ञ को रोगमुक्त समाज के निर्माण हेतु आज ही शुरु करें, नजदीक ही लगने वाली नि:शुल्क दैनिक, साप्ताहिक योग व यज्ञ कक्षाओं में जाना शुरु करें, बगैर किसी दुष्प्रभाव वाली योग व यज्ञ चिकित्सा का लाभ उठाऐं।

- पंकज आर्य, मु.योग शिक्षक, पतंजलि योगपीठ, अलीगढ़, मो. 8923233665, Email: aryapankaj2323@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह